IJAER/September-October 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्य महाकाव्य में वर्णित परिस्थितियाँ

डॉ. विनीता शर्मा, अध्यक्षा, संस्कृत विभाग,

मोनाड विश्वविद्यालय हापुड़

नेहरू औद्योगिक क्रान्ति के प्रर्वतक रहे। संचार माध्यमों और परिवहन के क्षेत्र में पश्चिम की वैज्ञानिक तकनीक से जुड़े रहे। स्वाधीनता–प्राप्ति के लिये वह अनेक बार जेल गये। महात्मा गाँधी के द्वारा संचालित सत्याग्रह आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, और सविनय अवज्ञा आन्दोलन में नेहरू ने सक्रिय रूप से भाग लिया। नेहरू राजनीति के क्षेत्र मंऔ प्रखर चिन्तन और रचनाधर्मी सोचवाले पहले व्यक्ति रहेय जिन्होंने अपने पूरे परिवार के साथ अनेक बार जेल की यातनायें भी सहीं। तत्कालीन समाज व्यवस्था, राजनैतिक विचारधारा, आर्थिक विषमता और शैक्षिक असमानता ने नेहरू को विश्वस्तरीय मानवीय मूल्यों से जोड़ा। नेहरू वैचारिक स्तर पर ऐनीबेसेन्ट की विचारधारा से भी प्रभावित हुये। उन्होंने विज्ञान से पुष्ट अध्यात्मवाद पर आधारित समाजवाद को महत्व दिया। हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा और उसके अध्यापन के मार्ग प्रशस्त करके भारतीयों को समन्वयवादी शिक्षा प्रक्रिया से जोड़ा।

श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्य में प्रयुक्त परिस्थितियों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. भारत के स्वाधीनता–संग्राम से पहले की परिस्थितियाँ
2. स्वाधीनता–प्राप्ति के बाद की परिस्थितियाँ

भारत अंग्रेजों के आधिपत्य में होने के कारण अपने देश के इतिहास, भूगोल और संस्कृति से विमुक्त हो गया था। उसकी उदार और उदात्त संस्कृति साम्राज्यवादी मानसिकता से कलुषित और दूषित हो गयी थी। उसकी शिक्षा, उसका साहित्य, उसकी चिकित्सा पद्धति और उसकी कलायें और उसका शिल्प सभी अपनी राष्ट्रवादी और मानववादी पहचान खो चुके थे। धर्म, दर्शन, शिल्प, व्यापार और राजनीति सभी ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रक्रिया से पराभूत विरूपित और विकृत हो गये थे। उनके पुरूत्थान और पुनर्जीवन की आवश्यकता थी। रचनाकार ने अपने महाकाव्य में ब्रिटिश साम्राज्य से अपने देश को स्वाधीन कराने के लिये स्वाधीनता–संग्राम की आवश्यकता थी, इसका इतिहास–सम्मत यथार्थवादी काव्यमयी भाषा में वर्णन किया है। महात्मा गांधी, गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, मदन मोहन मालवीय और श्री अरविन्द आदि तपोनिष्ठ ऋषितुल्य महापुरूषों और दार्शनिकों के सत्प्रयत्नों से भारत दासता से मुक्त हुआ। इस मुक्ति–आन्दोलन में सबसे अधिक रचनात्मक भूमिका तत्कालीन भारत के इतिहास–पुरूष जवाहर लाल नेहरू ने निभाई। उन्होंने विदेश में रहकर भारतीय संस्कृति के साथ–साथ सभ्यता और विश्वदर्शन का भी अध्ययन किया था। उन्होंने अध्यात्मवाद और विज्ञानवाद दोनों में सामंजस्य स्थापित किया। भारतीयों को पश्चिम के विज्ञान से जुड़कर अपने रूढ़गतिहीन जीवनमूल्यों को प्रगतिशील बनाने की प्रेरणा दी। रचनाकार ने इस महाकाव्य में यह भी स्पष्ट किया है कि भारत को आजाद कराने में जितने महापुरूष उस समय सक्रिय थे, वे सभी पूरी

तरह से राष्ट्रवादी थे। उनका चिन्तन भारत में अध्यात्मवाद से अनुशासित था। नेहरू ही एक ऐसे सजग और सतर्क, विद्रोही और क्रान्तिकारी नेता थेय जिनका चिन्तन गतिरूद्ध अध्यात्मवाद से पृथक विज्ञानोन्मुख मूल्यबोध पर आधारित था। उन्होंने भारतीयों को अपनी उदार और उदात्त परम्पराओं को बनाये रखते हुये वैज्ञानिक चिन्तन की ओर उन्मुख किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का आर्य–समाज–सम्बन्धी आन्दोलन और राजा राममोहन राय के सतीप्रथा विरोधी आन्दोलन ने नेहरू के समाजवाद को और गतिशील बनाया। रचनाकार ने अपने महाकाव्य में नेहरूकालीन भारत की सभी प्रकार की परिस्थितियों का यथार्थमूलक प्रयोग किया है। पूर्व और पश्चिम की विचारधारा के अन्तर को भी रचनाकार ने स्पष्ट किया है।

1.1 **राजनीतिक–**

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अपनी प्रसिद्ध काव्यकृति श्री 'श्रीजवाहर ज्योतिर्महाकाव्यम्' में स्वाधीनता–प्राप्ति से पहले की राजनैतिक परिस्थितियों के साथ–साथ स्वाधीनता–प्राप्ति के बाद के भारत के राजनैतिक परिदृश्य का मार्मिक चित्रण किया है। ब्रिटिश सरकार के लोकतन्त्र विरोधी कार्य से मुक्त होने के लिये जवाहर लाल नेहरू ने उस समय के सबसे बड़े राजनैतिक दल कांग्रेस पार्टी से जुड़कर महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता–प्राप्ति की लड़ाई लड़ी। अंग्रेजो ने प्रेस पर प्रतिबन्ध लगाकर बोलने की अजादी को छीन लिया था। भारत के कृषक वर्ग का जमींदारों द्वारा आर्थिक, शारीरिक और नैतिक शोषण हो रहा था। नारी मर्यादा विखंडित हो रही थी। श्रमिकों से बेगार ली जाती थी। अंग्रेजों ने किसानों द्वारा उत्पादित अन्न के भंडार सुरक्षित रखे थे।अनाज के भाव तेज हो गये थे। परिणामस्वरूप अंग्रेजों की इस खाद्यनीति ने बिहार में भुखमरी पैदा की। नेहरू ने तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को पराजित करने के लिये कृषक वर्ग और श्रमिक वर्ग को संगठित किया। उस समय के पूँजीपति वर्ग को राष्ट्रभक्ति और मानवसेवा से जोड़ने के लिये आर्थिक सहयोग के लिये प्ररित किया। उनसे एकत्रित धनराशि को दक्षिण अफ्रीका के विपन्न और त्रस्त भारतीयों की सहायतार्थ भेजा। कांग्रेस में विभिन्न राजनैतिक दलों को संगठित करने का प्रयत्न किया। नेहरू ने पूर्णस्वाधीनता का लाहौर अधिवेशन में प्रस्ताव पारित कराया। उन्होंने मसाजवादी मार्क्सवादी और मुस्लिम लीग आदि राजनैतिक दलों को एकजुट होने का आह्वान किया। नेहरू के राजनैतिक आन्दोलन का सूत्रपात तत्कालीन सामाजिक विषमता और आर्थिक असमानता से हुआ। नेहरू वर्ग चेतना की अपेक्षा जाति च्रतना में विश्वास करते थे। देश के सभी सामाजिक वर्गो के संगठित करके ही स्वाधीनता प्राप्ति की लड़ाई लड़ी जा सकती थी। वास्तव में इस सन्दर्भ में नेहरू का चिन्तन रूस के साम्यवादी नेताओं लेनिन और स्टालिन की विचारधारा से प्रेरित और प्रभावित था। नेहरू यह समझते थे कि अकेले पूँजीपति वर्ग अथवा अभिजात वर्ग को साथ लेकर स्वाधीनता की लड़ाई नहीं जीती जा सकती है। देश की सम्पूर्ण जनता को संगठित करके ही देश की विदेशी शासन से मुक्त कराया जा सकता है। नेहरू की यह समाजवादी विचारधारा तत्कालीन भारत के लिये ही नहीं आधुनिक भारत के लिये उपयोगी और प्रांसगिक है।

समस्त राजनैतिक आन्दोलनों का उन्होंने बड़े ही दूरदर्शिता सूझबूझ के साथ संचालन किया। यही नहीं जिनेवा–सम्मेलन और ऐलिजावेथ के राज्याभिषेक में सम्मिलित होना और विश्व के अनेक

देशों की यात्रा ने नेहरू के राजनैतिक विचारों को केवल उग्र ही नहीं बनाया अपितु उनका परिमार्जन और परिष्कार भी किया।

रचनाकार ने अपने महाकाव्य में यह बताया है कि नेहरू ने 18 वर्ष की आयु में ही राजनैतिक संघर्ष में भाग लिया। उन्होंने राजनैतिक संघर्ष में स्वंय रचनातम्क भूमिका का निर्वाह किया साथ ही भारतीय युवा वर्ग का स्वाधीनता–प्राप्ति के संघर्ष में सक्रिय भाग लेने के लिये प्रेरित और प्रोत्साहित भी किया, यथा–

'अष्ठाविंशतिवर्षाणि वयसः श्री जवाहरः

राजनैतिक संघर्ष यापयामास भारते।'

रचनाकार ने अपने विवेच्य महाकाव्य में यह स्पष्ट किया है कि नेहरू अपने जीविका यापन के क्षेत्र को त्याग कर कांग्रेस से सम्बद्ध होकर स्वाधीनता–प्राप्ति के संग्राम में कूद पड़े और पटना में बांकीपुर स्थान पर आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में भारतीय राजनीति का अध्ययन करने के उद्देश्य से सक्रिय भाग लिया। इससे उनके राजनैतिक अध्ययन का पता चलता हैं। यथा–

'तदा पाटलिपुत्रेऽभूत् कांग्रेसस्याधिवेशनः

अध्येतुं राजनीतिं सः तत्र सम्मिलितोऽभवत्।'

नेहरू का राजनैतिक चिन्तन गहन और व्यापक बन गया था। एक बार प्रयोग में उनके राजनैतिक भाषा का आयोजन हुआ। वहाँ एकत्रित जनसमुदाय में से जिन्होंने भी उनका भाषण सुना वे सभी उनके भाषण के अभिभूत हुये और सभी ने मुक्तकंठ से उनकी भाषण कला की प्रसंशा की और उनके राजनीति से जुड़े उत्साह को प्रशस्त किया। यथा–

'आकर्णितं प्रयोगे यैस्तत्कृतं भाषणं तदा

तैस्तस्यापूर्व प्रशस्तसे बहुभिजनैः'

रचनाकार ने अपने इस महाकाव्य में जवाहर लाल नेहरू की उन राजनैतिक विशारदों में गणना की है कि जो भारत में प्राचीनकाल से ही पैदा होते हैं और जिन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करते हुये उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है। रचनाकार ने यह संकेत दिया है कि राजनीति से जुड़ा व्यक्ति सामान्य रूप से उत्कृष्ट साहित्य की रचना नहीं कर सकता परन्तु नेहरू जी ऐसे योग्य और दूरदर्शी राजनेता रहे हैं। जिन्होंने विश्व राजनीति में अपना शीर्षस्थ स्थान बनाया और राजनीतिक कार्यो में व्यस्त रहते हुये भी उन्होंने मानवीय मूल्यों पर आधारित श्रेष्ठ साहित्य की रचना की। यथा–

'साहित्योत्कृष्टसृष्टारः कुशला राजनीतिषु

देशेद्दस्मिन् बहवश्चासन् प्राचीनादेव कालताः'

1.2 सामाजिक–

पं.रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अपनी काव्यरचना 'श्रीजवाहर ज्योतिर्महाकाव्य' में ब्रिटिशकालीन भारत की सामाजिक परिस्थितियों के स्वरूप को स्पष्ट किया है। उन्होंने इस महाकाव्य में यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि अंग्रेजों के शासनकाल में भारत का आर्थिक, नैतिक और सांस्कृतिक शोषण सुनियोजित ढ़ग से हुआ। ब्रिटिश सरकार ने जातिवादऔर धर्म पर आधारित सम्प्रदाय को विकसित किया। साम्राज्यवादी शासन–व्ययस्था की सफलता सम्प्रदायवाद को बढ़ावा देने में निहित हैं। अंग्रेज शासकों ने भारतीय किसानों का, देश के मजदूरों का और विभिन्न कार्यक्षेत्र से जुड़े कर्मकारों का निर्दयतापूर्वक शोषण किया। भारत में अन्धविश्वासों, आडम्बरों, कुरीतियों और कुप्रथाओं को बढ़ावा दिया। उनका एक ही लक्ष्य था कि भारतीयों को जाति– पाति, ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी, धार्मिक संकीर्णताओं में उलझाये रखना ब्रिटिश साम्राज्य की सफलता का आधार मानी जायेगी। नेहरू और महात्मा गांधी ने अंग्रेज शासकों की स्वार्थपूर्ण कूटनीति को समझा और भारत को राजनैतिक और आर्थिक स्वाधीनता दिलाने का ही संकल्प और प्रयत्न किया। अपितु भाषायी और सांस्कृतिक स्वाधीनता–प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू दोनों ही सम्पर्क भाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। वे जानते थे कि सम्पर्क भाषा हिन्दी द्वारा ही भारत की जनता को एकजुट किया जा सकता है। उसमें नवजागरण और नयी चेतना उत्पन्न की जा सकती है। विजेता देश की भाषा भारत में प्रयोग और प्रचलन में थी। राष्ट्रभाषा हिन्दी और देश की प्रादेशिक भाषाओं को ज्ञान–विज्ञान उद्योग और तकनीकी क्षेत्र में प्रयोग होने का अवसर ही नहीं दिया गया था। पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने महाकाव्य की भूमिका में 'अस्मदायम्' शीर्षक के अर्न्तगत संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता और लोकप्रियता का संकेत किया है। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि अँग्रेजी भाषा अपनी संरचना और प्रयोग–प्रक्रिया में नितान्त अवैज्ञानिक भाषा है। रचनाकार ने इस महाकाव्य की रचना बोधगम्य संस्कृत भाषा में करके संस्कृत काव्य परम्परा को नयी गति, नई दिशा और नयी ऊर्जा प्रदान की है।

रचनाकार ने अपने इस महाकाव्य में यह दिखाया है कि नेहरू समाज के सभी अंगों में सामंजस्य और सन्तुलन बनाये रखने के पक्ष में थे। उन्होंने राजनीति को समाजसेवा का अभिन्न अंग माना था। वह राजनीति को समाज पर शासन करने का अधिकार नहीं मानते थे अपितु लोकनीति से अनुशासित राजनीति में विश्वास करते थे। वह समाज के सभी वर्गो को एकजुट करके सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता ऊँच–नीच, छुआ–छूत सभी को दूर करना चाहते थे। उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र को समाज के विकास में सहायक माना। उद्योगपतियों और पूँजीपतियों के अन्यायपूर्ण कार्यो और उनकी समाजविरोधी गतिविधियों का विरोध किया। वह किसानों, मजदूरों, दलितों, और निर्धनों को देशके प्रगतिशील जीवन मूल्यों से जोड़ना चाहते थे। हिन्दुस्तान–पाकिस्तान के विभाजन से भारत में शरणार्थियों का आना जाना प्रारम्भ हो गया था। उनके लिये आवास, भोजन, और रोजगार की आवश्यकता थी। नेहरू ने इस सामाजिक आपदा को धैर्य और साहस के साथ सुलझाया। भारत में अकाल पीड़ित, देशवासियों की और दक्षिण अफ्रीका जैसे ब्रिटिश उपनिवेशवादी देश में भारतीय मूल के निवासियों की आपदाओं को दूर करने के लिये नेहरू ने तन, मन, धन से सहायता की। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि नेहरू भारत के आदर्श महापुरूष थे। वह सुलझे हुये, दूरदर्शी और पारदर्शी समाजशास्त्री थे। नेहरू ने गोपालकृष्ण गोखले से निर्देश पाकर तथा

उनके द्वारा भारत भूमि के अफ्रीकावासियों की सहायतार्थ गठित समिति से सम्बद्ध होकर विभिन्न स्रोतों से पचास हजार रूपये की धनराशि एकत्रित करके अफ्रीका भिजवायी। इससे गोपालकृष्ण गोखले के साथ–साथ नेहरूजी का देश प्रेम और देशप्रेमियों की सेवा का कार्य व्यंजित होता है। नेहरू की परोपकारी निष्ठा, लोकहित, की भावना और विश्वन्धुत्व की भावना भी व्यंजित होती है। यथा–

'यदा गोपालेन निजभरतमेः प्रसताम्

हिंत ध्यात्वार्थार्थे समितिमुपयाताः निगदिताः

सहस्त्रं पंचाशहन मुपगतौऽसौ निजभुव

ददावफ्रीकार्थ भरतभुविरत्नः स नेहरूः'

नेहरू जी समरसावादी समाज के समर्थक रहे हैं। भारतीय समाज के निर्माण और विकास में कृषकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नेहरू ने अवधक्षेत्र के किसानों के साथ रहकर उनकी सेवा ही नहीं की अपितु उन्हें अपनी जीवनशैली और कार्यशैली से सबसे अधिक प्रभावित किया। सन् 1919 ई. में नेहरू ने अवधक्षेत्र के किसानोंको संगठित करके स्वाधीनता संग्राम की सफलता की पृष्ठभूमि तैयार की। यथा–

'अङक्चन्द्रांक चन्द्राब्दे (1919) कृषकेश्ववधस्य च

अनेन यत्कृतं कार्य तेतासन् ते प्रभावताः'

नेहरू के समाजसेवी क्रान्तिकारी कार्यो से ब्रिटिश शासक विचलित हुये। उनकी समाज में बढ़ती हुई लोकप्रियता को बाधित करने के लिये अंग्रेज शासकों ने नेहरू को सन् 1921 ई. में छह मास के लिये प्रयाग–स्थित कारागार में डाल दिया। यथा–

'चन्दायुग्माङक् चन्दाब्दे (1921) गृहीतः शासकैस्तदा

षष्मासान्तं प्रयागेऽयं कारागारे तदाऽवसत'

रचनाकार ने अपने इस महाकाव्य में यह दिखाया है कि नेहरू देश के शिखरपथ पर सीधे नहीं पहुँचे। पहले उन्होंने प्रयोग जनपद में स्थित नगरपालिका के प्रधान पद अध्यक्ष पद को अलंकृ त किया। स्थानीय को नेहरू ने दलितों के प्रति समाजसेवा के भाव से

आकर्षित होकर सन् 1920 ई. में ब्रूसेल्स नगर में जब वहां के दलितों का वृहद् सम्मेलन हुआ तब उस सम्मेलन की सूचना पाकर भारत की काँग्रेस सत्सभा में श्री जवाहर लाल नेहरू ने अपना प्रतिनिधि बनाकर उस सम्मेलन में भाग लेने हेतु भेजा। यथा–

'युग्मयुग्माङक् चन्दाब्दे (1922) प्रयागनगरस्य चय

पलिकायाः प्रधानेऽसौ स्थानेऽध्यक्षत्वमाप्तवान्'

' रसयुग्माङ्क् चन्दाब्दे (1920) ब्रूशेल्सनगरे यदा

तत्रत्यदलितानां यदभूत् सम्मेलनं महत्

तदास संसूचिता तेन देशकांग्रेससत्सभा

अयं तत् प्रतिनिध्यिन तत्र सम्मिलितोऽभवत:'

नेहरू दलित और निर्धन वर्ग की सेवा के लिये ही सन्नद्ध नहीं थे अपितु श्रमिकों की सामाजिक स्थितियों और उनकी दयनीय दशा में सुधार लाने के लिये भी उद्यत रहे। श्रमिकों को संगठित करने की भावना से सन् 1929 ई. में नागपुर क्षेत्र में श्रमिकों के सम्मेलन का आयोजन हुआ। सुयोग्य और मर्मज्ञ नेहरू ने भारतीय श्रमिकों के सम्मेलन की अध्यक्षता की। इससे उनका श्रमिक प्रेम और श्रम के प्रति निष्ठाभाव व्यंजित होता है। यथा–

'असिवन् वर्षे सुयोग्योऽयं नेता भारतवासिनाम्

क्षत्रे नागपुरेऽध्यक्षः श्रमिणां सदसोऽभवत'

नेहरू की समाजसेवा उनकी सहृदयता और सदाशयता की बोध है। नेहरू पीड़ित जनसमुदाय के संरक्षक और उद्धारक रहे हैं।

यथा–

'अनन्तरं विहारस्य भूकम्पेनातिपीड़ितां

मुजफ्फरपुरं गत्वा सिशेवे पीड़ितानयम्

प्रयागे पुनरागम्य वस्त्राणि धनधान्यम्

एकीकृत्य बिहाराय प्रैयच्छीजवाहरः

शरणार्थिदशां दृष्ट्वा श्रुत्वाऽथ करूणां कथाम

श्रूणां धारया यै हिं रूदन दृष्टो जवाहरः'

1.3 विचारात्मक–

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने प्रसिद्ध काव्यग्रन्थश्रीजवाहर ज्योतिर्महाकाव्यम्में उन परिस्थितियों का भी चित्रण किया है। जिन्होंने तत्कालीन भारत के प्रबुद्ध वर्ग को वैचारिक स्तर पर प्रेरित और प्रभावित किया है। भारत में वेद, उपनिषद, और गीता आदि धर्मग्रन्थों के रचनाकाल से ही द्वैतावादी और अद्वैतावादी विचारधारा में प्रयोग और प्रचलन में विद्यमान थी। रचनाकार ने 'निम्बार्क शतकम्' और 'वल्लभाचार्य शतकम्' काव्यकृतियों की रचना करके भारत की स्वाधीनता से पूर्व दार्शनिक पृष्ठभूमि का प्रयोग किया है। इन्हीं दार्शनिक भक्त रचनाकारों से प्रेरित और प्रभावित होकर पराधीन भारत में समाजसुधार–सम्बन्धी अनेक सामाजिक संस्थायें वैचारिक क्रान्ति के स्तरपर प्रयत्नशील रहीं। राजा राममोहन राय का सतीप्रथा–विरोधी वैचारिक संघर्ष, स्वामी दयानन्द सरस्वती का मूर्तिपूजा

और अवतारवाद का निषेध करने वाले वेदों में वर्णित एकेश्वरवादी वैचारिक संघर्ष और 'एनी बेसेन्ट' का थियोसोफीकल संस्था से सम्बद्ध वैचारिक क्रान्तिमूलक संघर्ष भारत के बुद्धिजीवियों के लिये प्रेरक और प्रोत्साहक सिद्ध हुये। महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू दोनों ने इन सभी को वैचारिक क्रान्ति का पोषक माना।

नेहरू जी अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के समय से ही वैचारिक स्तर पर अपने गृह–शिक्षक ब्रूक महोदय से सर्वाधिक प्रभावित हुये। उनके आरम्भिक शैक्षिक जीवन में ब्रूक महोदय के सहयोग से थियोसोफीकल सोसाइटी के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। इसके पश्चात् इस संस्था की संस्थापक 'एनी बेसेन्ट' के आरम्भिक भाषणों ने नेहरू जी को गहराई तक प्रभावित किया। उनका जीवन–दर्शन थियोसोफीकल समिति कि विचारों से अनुशासित और संचालित हुआ। यथा–

'श्रीब्रूक्ससहयोगेन श्रीजवाहर जीवने

थियोसोफीकलविचाराणां प्रभावः सुमहानभूत

एनीबेसेन्ट प्रारब्धैर्भाषणैश्चापि भावतिः

थियोसोफिविचाराणां श्री मान जवाहरः'

नेहरू जी अपने जीवन में दार्शनिक स्तर पर रूस की साम्यवादी विचारधारा से सर्वाधिक प्रभावित रहे। यह साम्यवादी विचारधारा अपनी प्रकृति में सोम्यभाव की होने के कारण समतामूलक है। सर्वहारावर्ग की पीड़ा से उत्पन्न साम्यवादी विचारधारा समतामूलक समाजवाद का आणार है। नेहरूजी भारत में इसी विचारधारा का प्रसार करने के समर्थक रहे। उन्होंने विश्व शान्ति का आधार भी इसी विचारधारा को माना। विश्वशान्ति हेतु विश्व के विभिन्न देशों के सुधीविचारकों ने विश्व में समता, स्वाधीनता, और भ्रातृत्व भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से राष्ट्रसंघ की स्थापना की है। इसकी स्थापना से नेहरू जी की हार्दिक अभिलाषा पूरी हुई। विश्व भ्रमण करने के बाद विश्व के प्रमुख प्रखर चिन्तकों से विचार विमर्श करने के बाद नेहरू के मन में यह धारणा स्थिर हुई कि विश्व के समस्त देश परस्पर विरोध और वैमनस्य के भाव त्यागकर यदि एकजुट हो जाते तो सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। साम्यवादी विचारधारा से जुड़कर और विश्वशान्ति की भावना से प्रेरित होकर समस्त विश्व के देशवासी यदि समतामूलक विचारों में आस्थावान् हो जाये तो समस्त विश्व में सुख– शान्ति सद्भावना और समरसता का आविर्भाव हो सकता है और विश्व के सभी देश वैचारिक स्तर पर प्रगतिशील जीवन–मूल्यों से जुड़ सकते हैं। यथा–

'श्रीजवाहरलालस्य विचाराश्च सदैव हि

साम्यवाद समा नूनमासन् भारतभूतले

श्रीजवाहरलालस्य भावना पूर्णतां गता

राष्ट्रसंघः स्थापितोऽभूत सुशान्तेराभिलाषुकैः

देशाअपि तथैवास्य विश्वस्य न विरोधिनः

परस्पर भवेयुश्चेन्तदा शान्तिः सुनिश्चिता

तदालोकस्य राष्ट्राणां सर्व एव हि मानवाः

वसेयुः सुखतो लोके समस्ते इति निश्चितम्।'

जवाहर लाल नेहरू साम्यवादी विचारधारा के साथ–साथ अपने देश के पुराणग्रन्थों में वर्णित विचारधारा से भी प्रभावित हुये। उन्होंने अपने बाल्यकाल में जिन पुराणग्रन्थों का अध्ययन किया उनमें वर्णित विचारधारा उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में समाहित हो गयी और इनकी विश्वनीति का आधारस्रोत भी बनी। यथा–

'पुराणदिप्रसिद्धा हि स्वबाल्ये या कथाः श्रुताः

श्रीजवाहरलालेन विस्मृता जीवने न ताः'

जवाहर लाल नेहरू की विदेशनीति मानवतावादी मूल्यों से निर्मित और विकसि हुई। विश्व के सर्वहारा वर्ग की शोषण की प्रक्रिया ने उनकी विदेशनीति को मानवीय मूल्यों से सम्बद्ध और पुष्ट किया। नेहरू सम्पूर्ण विश्व को एक आदर्शपूर्ण प्रगतिशील इकाई के रूप में देखने के पक्षधर रहे। अतः उनकी विदेशनीति ने सम्पूर्ण देश के चिन्तकों, बुद्धिजीवियों और सुधीराजनेताओं को आकर्षित किया और विश्व के सभी राष्ट्राध्यक्ष नेहरू द्वारा प्रतिपादित विदेशनीति के प्रशंसक और सम्बर्द्धक रहें। यथा–

'श्रीजवाहरलालस्य नीतिर्वेदेशिकी तथा

श्रेष्ठाऽभूदन्यराष्ट्रणि ह्याकृष्टाणि तयाऽभवन्'

1.4 निष्कर्ष

रचनाकार ने अपने विवेच्य महाकाव्य में पराधीन भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनैतिक आन्दोलनों को जन्म देने वाली परिस्थितयों का सजग होकर सजीव चित्रण किया है। स्वाधीनता से पूर्व भारत में अनेक समाजसुधार सम्बन्धी आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ। उस समय के सबसे बड़े राजनैतिक दल कांग्रेस ने अन्य राजनैतिक दलों के साथ अनेक प्रकार के राजनैतिक आन्दोलनों का समारम्भ और संचालन किया। नेहरू सामाजिक आन्दोलनों से प्रेरित और प्रभावित हुये। उन्होंने तत्कालीन राजनैतिक जड़ता और अदूरदर्शिता को दूर करने के लिये अहिंसात्मक आन्दोलनों का आश्रय लिया। नेहरू ने गोपालकृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आन्दोलन की सुदृढ़ पृष्ठभूमि तैयार कर चुके थे। महात्मा गांधी के राजनैतिक विचारों से प्रभावित लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय और मोतीलाल नेहरू भी महात्मा गांधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलनों से जुड़े। महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलनऔर सविनय अवज्ञा आन्दोलनों ने उस समय के प्रबुद्ध वर्ग को ही प्रभावित नहीं किया अपितु समस्त देश की जनता को भी अपनी ओर आकर्षित किया। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और स्वदेशी की भावना ने भारत की जनता में देश प्रेम और समाजसेवा के भाव उत्पन्न किये। इस प्रकार महात्माजी द्वारा प्रवर्तित और

पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा संचालित तत्कालीन भारत का असहयोग आन्दोलन सर्वस्पर्शी और सर्वोतोमुखी बन गया। महात्मा गांधी का स्वर भारत की जनता का स्वर बन गया। उन एक एक कदम भारत की जनता के कदमों का प्रतिनिधि बन गया। नेहरू आन्दोलन स्तर पर महात्मा गांधी के प्रसंशक और समर्थक ही नहीं रहे अपितु उनकी विरासत के संरक्षक और उत्तराधिकारी भी बने। रचनाकार नेअपने इस महाकाव्य में अहिंसात्मक आन्दोलनों की परिणति स्वाधीनता प्राप्ति में दिखाई है। नेहरू ने महात्मा गांधी के आन्दोलनों से जुड़ी मानवतावादी विचारधारा का अपने सम्पूर्ण राजनैतिक जीवन में ईमानदारी और सच्चाई के साथ पालन किया। महात्मा गांधी के नीतिनिर्देशक तत्वों को भारतीय संविधान के आधारभूत तत्व माना और अपने प्रधानमंत्री काल में विश्व को एकता के सूत्र में बाँधने के लिये इन्हीं नीतिनिर्देशक तत्वों को आधारभूमि के रूप में अपनाया। जवाहरलाल नेहरू के बाद श्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित और जवाहरलाल नेहरू द्वारा संचालित नीतिनिर्देशक तत्वों का अपने सम्पूर्ण राजनैतिक जीवन में पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ पालन किया। लाल बहादुर शास्त्री तक यह परम्परा जीवन्त और गतिशील रूप में बनी रही। इन्दिरा गांधी के प्रधानमन्त्रित्व काल में इसका परिपालन नहीं हुआ। महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने से पहले ही गतिरोध उत्पन्न हुआ। भारत के सभी कार्य अवरूद्ध हुये। इन अवरोधों को दूर करके समस्त कार्यो को गति देने के उद्देश्य से ही सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ हुआ। महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में नेहरूजी ने तत्कालीन असहयोग आन्दोलन को नई गति तथा मार्ग प्रदान किया। महात्मा गांधी ने अंग्रेज शासकों के आश्वासन से स्थगित अविनय अवज्ञा आन्दोलन को छह सप्ताह के बाद पुनः आरम्भ किया। जवाहरलाल नेहरू ने महात्मा गांधी के परामर्श से देश में प्रथम मन्त्रिमण्डल का गठन किया। नेहरूजी ने प्रधानमन्त्री पद का निर्वाह अपनी सम्पूर्ण योग्यता और महानता के साथ जीवनपर्यन्त किया। अपने आन्दोलनों के क्रम में ही नेहरू ने महात्मा गांधी के साथ सन् 1930 ई. में दांडी यात्रा का अनुगमन किया। यह यात्रा स्वदेशी आन्दोलन को प्रभावी बनाने के लिये अपने देश में ही नमक बनाने के उद्देश्य से आरम्भ हुई थी।

ग्रन्थ–सूची

- डा०नगेंद्र(2012) 'हिन्दीसाहित्यकाइतिहास' मयूरपेपरबैक्स, दिल्ली, संस्करण
- कश्यप, सुभाष (2016) 'संवैधानिक राजनितिक व्यवस्था' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
- कश्यप' सुभाष (2012) 'हमारा संविधान' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
- विश्वनाथ, (2000) 'साहित्यदर्पण', डॉ. सप्तव्रतसिंह, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, दशमसंस्करण.
- दण्डी, विश्वनाथ'(2000) 'डॉ. सप्तव्रतसिंह', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, दशमसंस्करण.

- निरंजन' भगवान सह 'जो या देहि रहित है, सो है रमिता राम' हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- राजेश्री, 'भारत में भाषायी समन्वयन वेफ निहितार्थ एवं लोकतांत्रिक संभावनाएँ'हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- पंकज कुमार, मधुकर सह की कहानीरू समकालीन संदर्भ' हिन्दी साहित्य निवेफतन, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद (1999) 'कबीर'राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 7 आवृत्ति
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद(1991) 'हिन्दीसाहित्यकीभूमिका' राजकमलप्रकाशन, दिल्ली, संस्करण
- बाग्भट्ट, (1938) 'काव्यानुशासन'सम्पा. रसिकलालसी. परिखश्रीमहावीरजैन, विद्यालय, बम्बईप्रथमवृत्ति
- व्यास, डॉ. भोलाशंकरव्यास(2025वि.)'संस्कृतकविदर्शन'चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी–1, तृतीयसंस्करण